❀ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ❀

वैष्णव पदावली

चण्डीदासजी विरचित

अनुवादक

श्रीलक्ष्मीनारायणदास
श्रीविष्णुप्रियागौरांग आश्रम
वनखण्डी महादेव के निकट
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)
+91 9897457066, 7895028887

प्रेरक

श्रीप्रभुदास बाबाजी
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)
+91 8923400616

प्रकाशन तिथि : मई २०२५

NAVRANG OFFSET PRINTERS
A Complete Printing & Book Binding etc.
9975787982

TYPIST & GRAPHICS DESIGNER
Brijbhoosan Pathak 8881982106, 8630192318

(श्रीकृष्ण कीर्तन)
बड़ायि कर्तृक श्रीराधार रूपवर्णना
गुर्जरी राग–रूपक

केश पाशे शोभे तार सुरंग सिन्दूर।
सजल जलदे येहु ऊइल नव सुर।।
कनक कमल रूचि विमल वदने।
देखि लाजे गेला चान्द दुई लाख योजने।।
मुनि–मन–मोहिनी रमणी आनुपामा।
पदमिनी आहमार नातिनी राधानामा।।ध्रु०।।
ललित आलक पाँति कांति देखि लाजे।
तमाल कलिका–कुल रहे वनमाझे।।
आलस लोचन देखि काजले उजल।
जले पसि तप करे नील उतपल।।
कण्ठदेश देखिआँ शंखत भैल लाजे।
सत्त्वरे पसिला सागरेर जलमाझे।।
कुचयुग देखि तार अति मनोहरे।
अभिमान पाआँ पाका दाड़िम्ब विदरे।।
माझा खिनि गुरुतर विपुल नितम्बे।
मत्त राजहंस जिणि चलदा विलम्बे।।
दिने दिने बाढ़े तार नहुली यौवन।
गाइल बढू चण्डीदास बासलीगण।।१।।

पूर्णमासी द्वारा श्रीराधा का रूप वर्णन

उनके केशपाश में उज्ज्वल वर्ण का सिन्दूर शोभा पा रहा है। जैसे सजल मेघ में नया सूर्य उदित हुआ हो। उनका स्वर्ण कमल के समान सुन्दर विमल मुख देखकर लज्जा से चन्द्र दो लाख योजन दूर आकाश में चला गया

है। मुनि मन मोहिनी राधानाम्नी अनुपमा पद्मिनी रमणी मेरी नातिनी उनकी ललित अलक पंक्ति की कान्ति देखकर लज्जा से तमाल कलिका समूह के वन में रह गई। उनके काजल से उज्ज्वल आलस नयन देखकर नील पद्म जल में प्रवेश करके समकक्षता लाभ के लिये तपस्या कर रहा है। जिनका कण्ठदेश देखकर शंख को लज्जा हुई; इसीलिये वह शीघ्र ही सागर के जल में चला गया। उनके अति मनोहर वक्षस्थल देखकर अभिमान से पक्व अनार फल विदीर्ण हो गया। राजहंस की अपेक्षा भी उनकी सुन्दर चाल है। उनका नवयौवन चन्द्रकला की तरह विवर्धमान हो रहा है। वासलीदेवी का दास यह चण्डीदास यह गान गा रहा है।।१।।

श्रीकृष्णेर पूर्वराग

बड़ाइयेर प्रति श्रीकृष्णेर पौर्णमासी के प्रति कृष्ण की उक्ति

देशागराग–रूपक

तोर मुखे राधिकार रूपकथा सुनि।
धरिबाक ना पारों पराणी।।बड़ायि ल।।
दारुन कुसुमशर सुदृढ़ सन्धाने।
आतिशय मोर मन हाने।।बड़ायि ल।।
पराण आधिक बड़ायि बोलों मो तोम्हारे।
राधिका मानाआँ देह मोरे।।ध्रु०।।
कुसुमित तरुगण बसन्त समदा।
ताते मधुकर मधु पीरा।।
सुसर पञ्चम सर गाय पिकगणे।
तेकारणे थीर नहे मने।।
आतिशय बाढ़े मोर मदन विकार।
तात कर मोर उपकार।।
ए थानक आइल बड़ायि आह्मार भागे।

मोर काज तोम्हाते लागे।।
एकबार मोर तोहमे कर उपकार।
आह्मे देव संसारेर सार।।
राधिका मानाआँ बड़ायि पुर मोर आश।
बासली वन्दी गाइल चण्डीदास।।२।।

हे पूर्णमासी! तुम्हारे मुख से राधिका के रूपमाधुरी की कथा सुनकर प्राण धारण नहीं कर पा रहा हूँ। मदन मेरे मन को अत्यन्त उद्वेलित कर रहा है।

प्राणप्रिय बढ़ाई! (पूर्णमासी) राधा को मेरे वश में कर दो। देखो, इस बसन्तकाल में वृक्षों में प्रस्फुटित फूलों में मधुकर गण मधुपान कर रहे हैं। पिकगण पञ्चम सुस्वर में गान कर रहे हैं जिसे देख मेरा मदन विकार बढ़ रहा है। राधिका को पाकर जैसे मेरा मन शांत हो ऐसा उपकार करो। तुम मेरे भाग्यवश ही यहाँ आई हो, मेरा यह महत्त्वपूर्ण कार्य तुम ही कर सकती हो। यह उपकार तुम मेरा अवश्य ही करो। मैं ही तो संसार का श्रेष्ठ ईश्वर हूँ। अतः राधिका को मनाकर मेरा संग कराकर मेरी आस पूर्ण करो। वासली (मनसा) देवी की वन्दना कर उनकी कृपा से प्राप्त यह कृष्ण विनय सम्बन्धी 'गीत रत्न' जगत को भेंट कर रहा हूँ।।२।।

श्रीराधार विलाप
कालिय ह्रदे श्रीकृष्ण
सौरीराग–रूपक

आजि जखने मों बाढ़ायिलों पारा।
पाछें डाक दिल कालिनी मारा।।
तार फलें मोर पराण पती।
मोक छाड़ी काह् नाञि गेला कती।।

बाहुड़ रा काह्नेरूप मुरारी।
तों लागि बिकली राधा गोआली।।ध्रु०।।
सामल कोमल देह तोह्मार।
केमने सहिबें विषेर जाल।।
धिकछुक काह्नाञि से कालीनागे।
आह्मा ना दंशिल तोह्मार आगे।।
सह्मात बड़ याक तोह्मार नेहा।
या समे तेह्भार एकायि देहा।।
हेन चन्द्रावली करे काकुती।
कि कारणे काह्न ना देह सम्मति।।
दाँते तृण करि याचों काह्नाञि।
कपट छाड़ि आयिस मोर ठाञि।।
भाकतिदासिक तेजह केह्ने।
गाइल बढू चण्डीदास बासलीगणे।।३।।

आज जैसे ही मैंने घर के बाहर पैर बढ़ाया, उसी समय कालिनी माँ (जटिला) जिससे मेरा प्राणपति 'कान्हा' मुझे छोड़कर न जाने कहाँ चला गया? ओहे कृष्ण मुरारी! तुम चले आओ। तुम्हारी गोपी राधा तुम्हारे साथ मिलन के लिये व्याकुला हो रही है। हे श्याम! तुम्हारी देह तो कोमल है। विष के ज्वाला को कैसे सहन करेगी? हाय! हाय!! कालिय नाग तुम्हारे आगे मुझे दंशन कर लेता तो मुझे ये तुम्हारी विरह तो सहन नहीं करनी पड़ती और जिसके ऊपर तुम्हारी सबसे अधिक प्रीति है व जिसके साथ तुम्हारी एक ही देह है। वह चन्द्रावली भी तुम्हारे लिये विलाप कर रही है। हे कान्हा! तुम किसलिये उत्तर नहीं दे रहे हो? हे मेरे प्राण कान्हा दन्तों में तृण रखकर अत्यन्त विनयपूर्वक प्रार्थना कर रही हूँ, कि कपटता छोड़कर मेरे निकट शीघ्र ही आ जाओ। तुम मुझ अशुल्क दासिका को क्यों त्याग

कर रहे हो? चण्डीदास माता वासुली देवी की कृपा से यह गीत गा रहा है।।३।।

श्रीराधार आर गोपीगणेर अनुराग प्रकाश
गुर्जरीराग–यति

काह्नाञि देखि यत गोप गोपीगणे।
हरिषें हयिला तबें सजल नयने।।
केहो दृढ़ भुजयुगें कैल आलिंगन।
केहो घन घन तार चुम्बिल वदन।।
हरषित भैल सब युवती समाजे।
कालीय सापेर मुखे जिला देवराजे।।ध्रु०।।
ततिखने यशोदार देव दामोदरे।
तने हैतें झरिआँ पड़िल क्षीर धारे।।
बुइल दश दिश शून्य भैल मोरे।
चिरकाल जीउ पुत्र मोर गदाधरे।।
नेहें तबें आकुली राधिका ततिखने।
निमेष रहित बक सरस नयने।।
देखिल काह्नेर मुख सुचिर समए।
सकल लोकेर माझें तेजि लाज भए।।
काह्नाञि देखिआँ आर यत गोपीगणे।
सह्मे आलिंगन कैल आपण आपणे।।
हासछलें कैल मन हरिष विकाशे।
बासली शिरे वन्दी गाइल चण्डिदासे।।४।।

श्रीकृष्ण को देखकर जितनी भी गोप–गोपियाँ थीं। वे हर्ष से सजल नयना हो गईं। कोई उनको निज दृढ़ बाहू युगल में बद्ध कर लिया। कोई पुनः पुनः चुम्बन किया। समस्त युवतियाँ हर्षित हो उठीं। देवराज कृष्ण कालियानाग के मुख से रक्षा पा गया। उसी समय देव दामोदर के प्रति स्नेह वशतः माता यशोदा के स्तन से क्षीर धारा झरने लगी।

वे बोलीं– दशों दिशाएँ मेरी शून्य हो गई थीं। मेरा लाल (गदाधर) चिरञ्जीवी हो। तत्क्षण प्रेम में अति व्याकुला होती हुई राधा सभी लोगों के मध्य लाज भय त्याग करके कटाक्ष युक्त सरस दृष्टि समय सुदीर्घ काल तक श्रीकृष्ण का मुखकमल अवलोकन किया और कन्हैया को देखकर अपर सखियों में एक दूसरे को आलिंगन किया और हंसी के छल से अपने अपार आनन्द का प्रकाश किया। वासलीदेवी की वन्दना करते हुए चण्डीदास ने यह गीत गाया।।४।।

दानखण्ड

श्रीकृष्ण ओ श्रीराधार उक्ति प्रत्युक्ति

गुर्जरीराग–क्रीड़ा लगनी

सुन्दरि राधा, सुण समुखे,
पुछो मोएँ हृषीकेशे।
कथाँ ना बससि, कथाँ तोर घर,
जाइबें कोमण देशे।।ल राधा।।
गोकुले थाको, मो गोआल जाती,
तोहमे ना पुछह किके।
बोल शत गोपी, पसार साजिआँ,
मथुरा जाओ मो बिके।।
ओलाहा राधा, माथार चुपड़ी,
देखों मो तोह्मार पसारा।
कोन बथु लआँ, जाहा मथुरा,
ताहार देह विचारा।।
घृत दधि दुग्ध, आ आरे घोल,
ए सब मोर पसारा।
तोह्मे तो कमण, कारणे काह्नाञि,
चाह एहार विचारा।।

तोएँ ना जणसि, मोएँ माहादाणी,
ए दान सब आहमारे।
भाण्डे षोल पण, दिआँ माहादाण,
चल मथुरा नगरे।।
बिथर काले, बिथर शुणी,
हेन विपरीत वाणी।
अनेक समदा, मथुरार पथे,
घृत दुधे महादाणी।।
आजली राधा, तों आबाली बड़ी,
हेर पाज्जी परमाणे।
आपण चिह्निनआँ, दिआँ याहा दाण,
राखह आपण माणे।।५।।

श्रीकृष्ण ने जिज्ञासा की सुन्दरि! राधे! मेरे पास आकर सो वो! मैं ऋषिकेश तुमसे जिज्ञासा कर रहा हूँ, कहाँ रहती हो, तुम्हारा घर कहाँ है? कहाँ जाओगी?

राधा बोली– मैं गोकुल में रहती हूँ और गोप जाति की हूँ। तुम मुझसे क्यों जिज्ञासा कर रहे हो? सोलह सौ गोपियों के साथ मैं पसरा सजाकर मथुरा में विक्रय करने के लिये जा रही हूँ।

श्रीकृष्ण– माथे से मटकी उतारो, मैं पसरा देखूँगा। कौन वस्तु लेकर जा रही हो? उसका कर दो।

श्रीराधा– घृत, दधि, दूध, माठा है, तुम किस कारण से इसका विचार चाह रहे हो?

श्रीकृष्ण– तुम जानती नहीं। मैं हूँ महादानी, ये सब दान मुझे देकर मथुरा नगर को जाओ।

श्रीराधा– बहुकाल से बहुत कुछ सुना मगर ऐसी बात कभी नहीं सुनी। इतने दिनों बाद मथुरा में कोई माखन का

कर लेने वाला नियुक्त हो गया।

श्रीकृष्ण– हे राधे! तुम बड़ी ही अज्ञा हो लो इस खाते में प्रमाण देख। अपना नाम खोज लो, (मेरे दिल में) और तुम भी दान देकर अपना सम्मान की रक्षा करो।।५।।

श्रीराधार उक्ति

निषेध निलज वनमाली। बाथाने कि भेटे चन्द्रावली।।
तुमि इहाय पुछह बड़ाइ। किवा धन मगये कानाइ।।
हेमघट देखिया पाँतरे। चोरार मन सात पाँच करे।।
माकड़ेर हाते नारिकेल। खाइते साध भांगिते नाहि बल।।
फणीर माथाय मणि ज्वले। ताहा के लइते पारे बले।।
बडु कहे बासलीर वरे। बाडन्न कि चाँद धरे करे।।६।।

निर्लज्ज वनमाली को मना करो कि वह गोष्ठ में चन्द्रावली से न मिले; बड़ाई तुम इससे पूछो यह कौन–सा (प्रेम) धन चाहता है? श्रीराधारानी सर्व प्रेम की भण्डारी हैं। किन्तु प्रेम की परिभाषा न जानने वाला प्रेम का आस्वादन कैसे कर सकता है? जैसे सर्प के माथे पर मणि चमकती है। कैसे क्या कोई बलपूर्वक ले सकता है? (राधाजी के चमकते भाग्य को क्या कोई परास्त कर सकता है?) श्रीवासलीदेवी की कृपा से चण्डीदास कह रहे हैं, वामन क्या चाँद को हाथ में धारण कर सकता है?।।६।।

श्रीकृष्णेर उक्ति
देशबराड़ीराग–लघुशेखर

बाहु तुलिले केश बन्धन छले।
घन घन विकाशिले वदन कमले।।
आंग भंग कैले केह्ने मोर विद्यमाने।
एबें आलिंगन दिआँ राखह पराणे।।
किसे घुचायिलें राधा नेतेर आञ्चल।

देखायिलें कुचभार करायिलें बिकल।।ध्रु०।।
यमुनार तीरे राधा कदमेर तले।
तरल करिले केहने नयन युगले।।
आध मुख ढाकिले सरुअ वसने।
तेकारणे राधा धरितें नारों मने।।
यमुना नदीर राधा तुलिते पाणी।
केह्ने धीरें धीरें बुइलें मधुरस वाणी।।
तोहमार कारणे राधा राखों मो गोकुल।
तोहमे जाण काजेर आहमार आदिमूल।।
बातल हियलों मो तोह्मार दोषे।
तोरे करिते जुआए मोर परितोषे।।
यमुनार तीरे थाकों तोर पतिआशे।
बसली शिरे बन्दी गाइल चण्डीदासे।।७।।

हे राधे! अपने सुन्दर केश बन्धन का छल करके तुमने अपनी अलंकारों से सजी सुन्दर बाहूओं को उठाया। पुनः पुनः तुमने तुम्हारे मुखकमल से हंसी। मुझे मदन शर से घायल कर देने वाली अंग भंगी क्यों की? हे प्यारी! अब मुझे आलिंगन देकर प्राण रक्षा करो। तुम्हारा आंचल हटने से जब मैंने तुम्हारा मनोहर हृदय देश देखा तो मैं विकल हो उठा हूँ। जब से यमुना के तट पर कदम्ब के तल पर तुम्हारे मेरे प्रति चंचल होते हुए नयनों को देखा है। सूक्ष्म वस्त्र से जब तुम्हारा आधा ढ़का तुम्हारा मुखकमल देखा तब से मैं मन संयत नहीं कर पा रहा हूँ और यमुना नदी के तट के घाट पर जल भरते समय तुम्हारी मधु मिश्रित रसमयी वाणी को सुनकर हे राधे! तुम्हारे प्रेम में अब मैं पागल हो गया हूँ।

जब से देखा है राधारानी तुम्हें

लुट गया लुट गया लुट गया लुट गया।

इसीलिये हे राधे! तुम्हारे कारण ही मैं गोकुल की रक्षा करता हूँ। तुम मुझे अपना सर्वाधिक प्रेमी जानो। अतः तुमको मुझे सन्तुष्ट करना कर्त्तव्य है। तुमसे मिलने की आस में मैं अब यमुना तट पर ही रहता हूँ। वासलीदेवी को नमन करते हुए चण्डीदास ने यह कृष्णगीत गाया।।७।।

श्रीराधार उक्ति
रामगिरीराग–रूपक

आउलाइल कुन्तल मोर सत्वर गमने।
करयुगल तुली तार करिलों बन्धने।।
श्रमेर कारणे हाम्भी हैल घन घने।
गाअ मोदिदा काहनञि आलस्य कारणे।।
तोहमा देखि यदि मोर विचलिल मने।
तबें मोरे जीते ना जुआए एखने।।ध्रु०।।
पवने चलिल मोर हृदय वसने।
दैवयोगें तात तोर पड़िल नयने।।
लाज भएँ भैल मोर तरल नयने।
सत्त्वरे ढाकिलौं मुख देहेर वसने।।
यमुना नदीर आहमे तुलिल पापी।
एहो दोष नहे येन बुयिलों खर वाणी।।
जीवार आन्तरे काहनाञि राखह गोकुले।
पाप पामर तोर जीणों आदिमूल।।
आपद पाए याक ना चिह्ने आपणा।
एहा जाणी तेज काहनाञि नागरपणा।।
पागल हैला काहनाञि निज मतिदोषे।
बसली शिरे बन्दी गाइल चण्डीदासे।।८।।

तुम्हारा संग त्याग करने के लिये तेज चलने से

मेरे केश बिगड़ गये थे। दोनों हाथ इसीलिये उठाकर उन्हें बाँधा था। परिश्रम के कारण मेरी घन घन हाई उठी थी। हे कान्हाई! आलस्य हेतु मैंने अंग मोड़ा दिया था। तुमको देखकर यदि मेरा मन विचलित होता है तो मेरा बचना उचित नहीं है। हवा से ही मेरे हृदय देश का वस्त्र हट गया था। दैवयोग से उस समय तुम्हारी मुझ पर आँख पड़ी।

जब तक न पड़े श्यामसुन्दर की नजर।
राधा का श्रृंगार अधूरा रहता है।।।

इससे मेरे नयन चंचल हो गये थे और तुमको मैंने मधुरस वाणी नहीं रूढ़ कथा कही थी और तुम अपने को बचाने के लिये ही गोकुल रक्षा करते हो और मैं तुम्हारा आदि मूल (रसिकपना) जानती हूँ। जिसे वन में अकेले पाते हो उस पर ही डोरे डालते हो। मैं तुमको पहचान गयी हूँ। (तुम स्वयं को नहीं) इसीलिये कान्हाई! तुम नागरपना छोड़ो और तुम्हारे मतिछन्न होने से ही तुम पागल हुए हो। वासलीदेवी को नमन करते हुए चण्डीदास कृष्णलीला गान करते हैं।।८।।

नौका–खण्ड
श्रीराधाकृष्णेर मिलन
भाटि आलीराग–रघुशेखर

यबे राधा गोआलिनी पातल कैल गाए।
हे हे लहे।
तबें हिअ हिब बुली काह्न बाहे नाए।।
हे हे लहे लहे।
आकाशेर तारा येन छुटि गेल नाए।
अध नदी गेलें पुणि बहे खर बाए।।
राधाएँ बुलिल काहन झाँट बाहि या।

ढेउ देखि मोर हाले सब गा।।
दुतरत पार कर एकबार काहन।
पार हैलें तोर बोल ना करिवों आन।।
नाअ टालबलाए आधिके दामोदर।
दुगुन बाढ़िल राधिकार भणे डर।।
काहनेर मनत भैल मदनविकार।
छल करि टालिलेक राधार पसार।।
तखन छाड़ायिल घृत दधि घोल।
डर पायि राधा काहनाञिके मांगे कोल।।
कोले कर काहनाञि बड़ायि जुनी जाणे।
बड़ायि जाणिले जाणे कंस आइहने।।
ए बोल सुणिआँ काहनाञि मनेर हरिषे।
नाअ डुबायिआँ राधा कोले करि भासे।।
आलिंगन पाइल काह्नाञि राधार तरासे।
बासली शिरे बन्दी गाइल चण्डीदासे।।९।।

(राधिका दधि भार लेकर यमुना पार जाना चाहती हैं। श्यामसुन्दर छोटी नौका लाये हैं) राधिका श्याम की नौका लेकर बैठ गई हैं। श्यामसुन्दर नौका को बीच भंवर में ले गये और कहा– राधे! नौका तुम्हारे भार के कारण डूब रही है। हल्का होने के लिए अपने आभूषण खोलो। आधी नदी पार होने पर पुनः तूफानी वायु चलने लगी; राधिका ने कहा– श्याम शीघ्र चलो, जल की तरंग देखकर मेरा सारा देह कांप रहा है।

हे कृष्ण! एकबार इस दुस्तर यमुना से पार कर दो। पार करने पर तुम्हारी बात मानूंगी, इतना सुनकर श्यामसुन्दर नौका को गहरे भंवर में ले गये, जिससे राधिका के मन में दुगना भय उत्पन्न हो गया। तब कन्हैया के मन में मदन विकार उत्पन्न हो गया। तब उसने राधिका

का घड़ा छलका दिया; जिससे दही–मक्खन छिटक गया। राधिका गाने लगी–

मेरी भरी मटुकिया फोड़ गयो कान्हा वंशी वारो
कान्हा वंशी वारो, ये यशोदा को है दुलारो
मेरी भरी मटुकिया.....
रोज रोज ये मटकी फोड़े नई कहाँ से लाये

इतना कहकर राधा ने कि कहीं, जटिला देख न दे। श्याम के देह में छिपना चाहकर उनसे आलिंगन चाहा। यह कथा सुनकर कन्हैया ने नौका डुबाकर राधिका को गोद में ले राधिका ने भी संकट से बचने के लिये कृष्ण को आलिंगन किया। राधिका के त्रास के कारण कृष्ण ने राधा का आलिंगन पाया। वासली की कृपा से उनको मस्तक से प्रणाम करते हुए चण्डीदास ने यह राधा के प्रेम के गीत को गाया है।।९।।

भार–खण्ड
माहारठराग–एकताली

चामड़ काठेर, बाँहुक योड़िआँ,
तेरछ कैल सीका।
आगें बड़ायि जाए, पाछे भार बहे काह्न,
माझे राधिका जाए बिका।।
लड़िला जनार्दन, कान्धे लञा भार,
दधि बिके मथुरार राजे।
देखि सब देवागन, खलखलि हासे ल,
भावे मजिला देवराजे।।ध्रु०।।
सोनार भाण्डे, दधि दुध सजाइआँ,
रूपार भाण्डत सजाइल घी।

से भार देव, वनमाली बहे ल,
उलसिली गोआलार झी।।
भार लआँ जीयितें, पसार टलिआँ गेल,
छाड़ायिल किछु दुध दही।
सोनार रूपार भाण्ड, तेरछ हैल ल,
देखि बुके धाअ दिल राही।।
लाज पाआँ काहनाञि, भार एड़िआँ मिल,
देखि सब सखिगण हासे।
बासलीचरण, शिरे वन्दिआँ,
गाइल बडु चण्डीदासे।।१०।।

छलिया का वेश बनाया श्याम दधि बेचन को आया।
दधि बेचन को आया श्याम दधि बेचन को आया।।

आज श्याम ने नई तरकीब सोची है, काठ की बाक को जोड़कर सीका तैयार कर कोमलांगी राधिका का दधि भार अपने कन्धे पर लेकर जा रहे हैं। आगे जटिला बीच में राधिका जा रही हैं। यह देखकर देवतागण हँसने लगे। अहो! देवराज कृष्ण आज राधाभाव में मत्त हो रहे हैं। श्यामसुन्दर को देखकर पहचान कर पात्रों (मटकियों के हिलने से) कुछ दही-मक्खन बिखर गया। देखकर प्रेम-पूर्णा राधा ने जब अपने कोमल हस्त से श्याम के हृदय पर आघात किया तो श्याम छद्म रूप में ही राधिका के पास खड़े हो गये। ललिता-विशाखादि सखियों ने अपने प्रेममय नयनों से पहचान लिया। तब सखियाँ हास्य-विनोद करने लगीं। माता वासली की कृपा से यहलीला स्फुरण हुई, उनके श्रीचरणों की वन्दना करके चण्डीदास श्रीराधागोविन्द लीला का गान कर रहा है।।१०।।

छत्र–खण्ड
श्रीराधा के प्रति श्रीकृष्णे की उक्ति
देशागराग–एकताली

लावण्य जल तोर सिहाल कुन्तल।
वदन कमल शोभे आलक भषल।।
नेत्र उत्पल तोर नासा णाल दण्ड।
गण्डयुग शोभे मधुक अखण्ड।।
सुन्दरी राधा ल सरोअरमयी।
दुसह विरह जरे जरिला काह्नाञि।।ध्रु०।।
हास कुमुद तोर दशन केशर।
फुटिल बन्धुली फुल वेकत आधर।।
बाहु तोर मृणाल कर राता उत्पल।
अपुरुब कुच चक्रवाक युगल।।
ईषत फुटित पद्म तोर नाभि थाने।
कनकरचित तोर त्रिवली सोपाने।।
गरुअ नितम्ब पाट शिला विद्यमाने।
आरपिले हेम पाट शोभेर जघने।।
गरुअ उरु णाल पद हेम कमल।
तात सुललित रए नूपुर भषल।।
तोह्मा छाड़ी नाहिं जर हरण उपाए।
बासली शिरे वन्दी चण्डीदास गाए।।११।।

हे राधे! तुम्हारे देह रूपी सरोवर में लावण्य है जल, कुण्डल है कोई, श्रीमुख है पद्म, उस पर अलकावली रूप भ्रमर समूह शोभा पा रहा है। तुम्हारे नयन नीलकमल के समान, नासिका मृणाल दण्ड, तुम्हारे गण्ड युगल में, अखण्ड महुया फूल शोभा पा रहे हैं।

हे सुन्दरि राधा! तुम सरोवरमयी (राधा कुण्डेश्वरी) हो। तुम्हारे दुसह विरहज्वर में कृष्ण जरजर हो गये हैं।

तुम्हारे हास्य कुमुद में पुन्नाग पुष्प व्यक्त अधर में बान्धूलि फूल फूटा है। तुम्हारी बाहू युगल करतल रक्तपद्म पदद्वय हेमकमल उस पर नूपुर रूप में भ्रमण गण सुललित रव कर रहे हैं। तुमको छोड़कर उनका विरह ज्वर दूर करने का कोई उपाय नहीं है। वासलीदेवी की कृपा से चण्डीदास यह गीत गा पाया है।।११।।

वंशी–खण्ड
आक्षेपानुराग
श्रीराधार उक्ति
केदारराग–रूपक

के ना वाँशी बाए बड़ायि कालिनी नइ कुले।
के ना वाँशी बाए बड़ायि ए गोठ गोकुले।।
आकुल शरीर मोर वेआकुल मन।
वाँशीर शबदे मों आऊलाइलों रांधन।।
के ना वाँशी बाए बड़ायि से ना कोन जना।
दासी हआँ तार पाए निशिबों आपना।। ध्रु०।।
के ना वाँशी बाए बड़ायि चित्तेर हरिषे।
तार पाए बड़ाञि मों कलों कोण दोषे।।
अझर झरए मोर नयनेर पाणी।
वाँशीर शबदें बड़ायि हारायिलों पराणी।।
आकुल करितें किवा आह्मार मन।
बाजाए सुसर वाँशी नान्देर नन्दन।।
पाखि नहों तार ठाञि उड़ि पड़ि जाओं।
मेदनी बिदार देउ पसिआँ लुकाओं।।
वन पोड़े आग बड़ायि जगजने जाणी।
मोर मन पोड़ो जेहन कुम्भारेर पणी।।
आन्तर सुखाए मोर काह्न आभिलासे।
बासली शिरे वन्दी गाइले चण्डीदासे।।१२।।

हे पौर्णमासी देवी! इस कालिन्दी नदी के तट पर कौन वंशी बजा रहा है? ना जाने कौन गोकुल की गौशाला में वंशी बजा रहा है? ओहो न जाने कौन जन वंशी बजा रहा है? दासी होकर उसके श्रीचरणों में बिक जाऊँगी, इतने आनन्द से कौन वंशी बजा रहा है? उसके चरणों में मैंने क्या अपराध किया, कि मेरे नयनों से निरन्तर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। इस वंशीनाद ने मेरे प्राण ही हरण कर लिये। मेरा मन व्याकुल करने के लिये क्या नन्दनन्दन ही वंशी बजा रहा है। पर नहीं अन्यथा उसके पास उड़ जाती, अथवा पृथ्वी विदीर्ण हो जाती तो उसके भीतर छिप जाती। अग्नि जलती हुई तो दिखती है, किन्तु मेरे हृदय की अग्नि नहीं दिख रही है। कृष्णमिलन की अभिलाषा में कितना सुख होता है? किन्तु उनके न मिलने से मेरा हृदय सूख रहा है। वासलीदेवी की वन्दना कर चण्डीदास ने यह कृष्णलीला गान किया।।१२।।

श्रीराधा की उक्ति
कोड़ारराग–एकताली

सुसर वाँशीर नाद शुणिआँ बड़ायि,
रान्धिलों ये सुनह काहिनी।
आम्बल व्यञ्जने मो वेशोआर दिलों,
साके दिलों कानसोओं पाणी।।
रान्धनेर जुती हारायिलों बड़ायि,
सुणिआँ वाँशीर नादे।।ध्रु०।।
नान्देर नन्दन काह्न आड़वाँशी बाए,
येन रए पञ्जरेर शुआ।
ता सुणिआँ घृते मो परला बुलिआँ,
भाजिलों ए काँचा गुआ।।

सेइत वाँशीर नाद सुनिआँ बड़ायि,
चित्त मोर भैल आकुल।
छोलंग चिपिआँ निमझेले खेपिलों,
बिणि जले चड़ाइलों चाउल।।
यमुनार तीरे कदम तरुतले,
तहि बसि काह्न बाए बाँशे।
ताक आणिआँ बड़ायि राखह पराण,
गाइल बढू चण्डीदासे।।१३।।

हे बड़ायि! सुस्वर वंशीनाद से मेरा रन्धन विश्रृंखल हो गया। शुक–पक्षी के नाद को भी पराजित कर देने वाला वह नाद मुझे विचलित कर रहा है। मैंने जल बिना ही चावल रन्धन के लिये रख दिया।

यमुना तट पर कदम्ब वृक्ष के नीचे मेरा श्याम वंशी बजा रहा है। हे बड़ायि! उसे लाकर मुझसे मिलाओ नहीं तो मैं उड़ जाऊँगी उनके पास.....

कान्हाऽऽऽ तूने बाँसुरी ऐसी बजायी
मैं दौड़ी चली आई मैं भागी चली आई।
कहाँ छिपा है मुझको बता दे
मेरे नयनों को दरश करा दे
तेरे लिये तो मैंने नींद भी है बिसराई
मैं दौड़ी चली आई मैं भागी चली आई

वासलीदेवी की वन्दना कर चण्डीदास ने यह गान किया।।१३।।

श्रीराधा की उक्ति
रामगिरीराग–यति

आषाढ़ श्रावण मासे, मेघ वरिषे येह्न,

झरए नयनेर पाणी।
आल बड़ायि।
संपुटे प्रणाम करि, बुइलों सब सखिजने,
केहो नान्दे काह्नाञिके आणी।।
आल बड़ायि चाहा चाहा।
कोण दिगें मौहारी बाजे।।ध्रु०।।
रूपस देखिए यथाँ, नाना फुल फल गड़ा,
सेइ से काह्नाञिर देश।
नान्देर नन्दन काह्न।
सोंअरितें पाञ्जर शेष।।
काहनाञि विहाणे मो, सकल संसार भैल,
दश दिग लागे मोर शून।
आञ्चलेर सोना मोर,के ना हरि लआँ गेल,
किवा तार कैलों अगुण।।
तोह्मारा आगत, सत्य बुयिलों बड़ायि,
तोर बोलर ना करिबों आने।
आणिआँ काहाञि देह, बडु चण्डीदास गाए,
बन्दिआँ बासलीचरणे।।१४।।

आषाढ़, श्रावण मास में जैसे मेघ वर्षण करता है, उसी प्रकार कृष्ण के लिये नयनों से जल बरस रहा है। हे देवी! मैंने हाथ-जोड़ प्रणाम करके सखियों से कहा किन्तु कोई भी कन्हैया को लाकर नहीं दी। हे पौर्णमासी! खोज के देखो किस ओर मुरारी वंशी बजा रहा है? नाना फल और फूलों से गठित यह स्थान सुन्दर देख रही हूँ, वही तो कन्हाई का देश है। नन्दनन्दन कन्हाई उसको स्मरण करते क्षीण हो रहे हैं। कन्हाई के बिना मेरा सारा संसार शून्य हो गया है। दशों दिशाओं में अन्धकार लग रहा है। मेरे

आँचल का सोना न जाने कौन हरण करके ले गया? मैंने उसका क्या बिगाड़ा देवी! तुम्हारे आगे सत्य कह रही हूँ, तुम्हारी बात को मैं अन्यथा नहीं करूँगी। मुझे कन्हाई को लाकर दो। वासलीदेवी की कृपा से चण्डीदास ने यह गीत गाया है।।१४।।

वंशीहरण
धानुषीराग–एकताली

मेघ येह्न आषाढ श्रावणे। झरे तार पाणी नयने गो।।
कान्दिआँ मलिन कैल मुखे। कत तार देखिबों दुःखे गो।।
बाँशीर शोके चक्रपाणी। एबें ताक वाँशी देह आनी।। ध्रु०।।
योड़हाथ कैल देव काह्ने। एबें ताक वाँशी देह दाणे।।
नाहिं पिन्धे उत्तम वसने। शरीरे दुबल भैल काह्ने।।
मोर बोल सुण आवगाही। कानाईर पिरिती कर राही।।
देह वाँशी कानाईर हाथे। तुष्ट हऊ देव जगन्नाथे।।
येवा राधा आछे तोर मणे। काह्नाञिके बोल से आपणे।।
ताक करिव काह्नाञि हरिषे। गाइल बहु चण्डीदासे।।१५।।

आषाढ़ और सावन मास का मेघ जिस प्रकार कृष्ण के नयनों से जल बरस रहा है रोकर उसने अपना मुख मलिन कर दिया है और कितना दुःख देखूँगी? वंशी के शोक से कातर हो रहा है उसे वंशी लाकर दो। देव वन्दनीय कृष्ण हमें हाथ–जोड़ रहा है। उसका देह दुर्बल हो गया है। ध्यान से मेरी बात सुनो राधे! यदि तुम कृष्ण से प्रेम करती हो तो कृष्ण को वंशी दे दो। वासलीदेवी की श्रीचरण वन्दना के प्रसाद से चण्डीदास यह 'वंशीहरण' गान गाया।।१५।।

वृन्दावन–खण्ड
श्रीराधार प्रति सखीर उक्ति
देशबराड़ीराग–लघुशेखर

तोर रति आशो आशें गेला अभिसारे।
सकल शरीर वेश करी मनोहरे।।
ना कर विलम्ब राधा करह गमने।
तोम्हार संकेत वेणु बाजाए यतने।।
कालिन्दी नीर तीरे बहे मन्द पवने।
तोहमाके चिन्तितें आछे नान्देर नन्दने।। ध्रु०।।
तोर तनुगत रेणु चलिल पवने।
ताहाको करए काहन आति बहुमाने।।
पाखि बसितें तरुपातचलने।
ताहुमार गति शंकिआँ रचये शयने।।
चाहै दश दिश काह्न चकित नयने।
कत खने आइसे राधा एहि करी मणे।।
तेजह सुन्दरि राधा मुखर मञ्जीर।
सत्वरे चलह कुञ्ज ए घन तिमिर।।
कृष्णेर हृदये राधा रति विपरीते।
शोभे मेघ माले येहेन तड़िते।।
गलित वसन हीन रसन जघने।
आपणे आरेप गिआँ पल्लवशयने।।
मानी बड़ भैल काह्नाञि शेष रजनी।
तार पुर मनोरथ मोर बोल सुणी।।
एबे आयुगत राधा विलम्ब गमने।
गाइल बडु चण्डीदास बासलीगणे।।१६।।

श्रीराधिका के प्रति विशाखा सखी की उक्ति– हे राधे! तुमसे मिलन की आस में आज कृष्ण सुन्दर मनोहर श्रृंगार करके वन में गये हैं, अतः अतिशीघ्र गमन करो। तुम्हारे उद्देश्य से वह वेणु बजा रहा है। देखो, न कालिन्दी के तट पर मन्द सुमन्द पवन बह रही है। नन्दनन्दन तुम्हारा ही इंतजार कर रहा है। पवन से चालित तुम्हारे चरण रेणु

को वह बहु मान्य कर रहा है। पवन से विचलित पतों की ध्वनि को तुम्हारे आगमन की आशा में शय्या की रचना कर रहा है। मेरी प्राणन प्यारी राधा कब आयेगी? यह चिन्ता करता हुआ चारों दिशाओं में निहार रहा है। इन ध्वनिकारी पायलों का त्याग करके अन्धेरे में छिपकर शीघ्र कुञ्ज में चलो। रति काल में राधा मेघमाला के ऊपर विद्युत की तरह शोभा के समान चलकर कृष्ण की शोभा बढ़ाओ। देखो न रात बीतने को आई श्यामसुन्दर ने मान किया है। मेरी प्रार्थना सुनकर मेरा मनोरथ पूर्ण करो। गमन में विलम्ब अब उचित नहीं है। वासलीदेवी की कृपा से चण्डीदास ने यह राधाविरह गीत गाया है।।१६।।

रास
गोपी विलाप
पाहाड़ियाराग–क्रीड़ा

आहा!
के न सुतीतथे तप कैल भाग्यमती।
के नारी काह्नेर संगे करे सुरती।।
काह्न बिनी आभागिनी गोप युवती।
देख सह्मे निकुञ्जे गोविन्द गेल कती।।
हरि हरि।
सुन्दर से गीत गाआँ बाआँ करताली।
देख पाअ चिह्न कथाँ गेला वनमाली।। ध्रु०।।
के ना कुशक्षेत्रे विधिमतें कैल दान।
काहार फलिल पुक्षर पुण्य सिनान।।
काहाके मिलिल आजि अष्ट महासिधी।
कारें हाथें हाथें निआँ विधि दिल निधी।।
के ना केदारशिर परसिल करे।
के ना तप तपिल बदरी वटेश्वरे।।

के गाअ तेजिल गंगासंगत सागरे।
या लआँ कुञ्जे कुञ्जे बुले गदाधरे।।
हेनमते विलपिला सकल युवती।
लाग ना पाइआँ देव आधिपती।।
रोषिलि राधिका दिल खर वचन।
गाइल बडु चण्डीदास बसलीगण।।१७।।

ऐसी भाग्यवती कौन है जिसने सुतीर्थ में तपस्या की? कौन नारी कन्हैया के संग प्रेम कर रही है? कानु विरहिता अभागिनी सभी गोप युवती सभी खोजकर देखो! निकुञ्ज में गोविन्द कहाँ गये? 'हरि-हरि' यह मंगल गान करते हुए करताली बजाकर वनमाली कहाँ गये? उनके श्रीपदकमल के चिन्हों को देखते हुए उनका अन्वेषण करो। ऐसा कौन है जिसने विधि मत से कुरुक्षेत्र में दान नहीं किया है? अथवा किसका पुष्कर तीर्थ में स्नान का फल फलित हुआ है। किसको आज अष्ट सिद्धियाँ मिली हैं। भला किसको विधि ने हाथों-हाथ निधियाँ लाकर दी हैं। अथवा कौन हाथ से केदारनाथजी को हाथ से स्पर्श कर पाया? और किसने बदरी वटेश्वर में तपस्या की है? और किसने गंगासागर में कृष्ण प्राप्ति की? कामना करके देहत्याग किया; जिनको लेकर कृष्ण कुञ्ज-कुञ्ज में विचरण कर रहे हैं। श्रीकृष्ण को खोजती-खोजती उनका अनुसंधान न पाकर गोपीगणों ने इसप्रकार विलाप किया। राधारानी ने रुष्ट होकर ऐसे कठोर वचन कहे- श्रीवासलीगणजी की कृपा से बडू चण्डीदास ने यह राधा गीत गाया है।।१७।।

महारास
कोड़ाराग-क्रीड़ा

बुझिआँ गोपीर मने।

आल।
खणेक गुणिल काह्ने।
षोल सहस्र गोपी तोषिबों केमने।।
आनेक हयिआँ तखने।
विलसिल गोपीगणे।
याहारे रमए सेसि देखे काहने।।
आल।
सब गोपीजन जाणे।
मोएँ से पायिलों ए बने श्रीमधुसूदने।।ध्रु०।।
फुटिल कुसम पुञ्जे, सरस भ्रमर गुञ्जे,
एक एक नारि लआँ एक एक कुञ्जे।।
चिर मनोरथ पुरि, रसमय मन करी,
वृन्दावन माझे रति भुञ्जिल मुरारी।।
एकें एकें गोपीजने, सह्मे जाणिल आपणे,
राधाते अधिक काह्न मणे।।
किछु ना बुयिल वाणी।
राधा चन्द्रावली मणे कैल चक्रपाणी।।
संहरी सकल देहे, गोपी एड़ि कुञ्जगेहे,
विकल गोविन्द मुरारी राधार नेहे।।
गेला राधिकार पाशे, सुरति रसेर आशे,
गाइल बढू चण्डीदासे।।१८।।

गोपियों के मन के भाव को समझकर कृष्ण क्षणकाल चिन्ता किये, सोलह हजार गोपियों को किस प्रकार से सन्तुष्ट करूँगा। तब श्रीकृष्ण भी जितनी गोपियाँ थीं उतने ही रूप धारण करके उनके साथ रास विलास किया। जिन-जिनके साथ श्रीकृष्ण रमण कर रहे थे वे वे ही सोच रहीं थीं कि कृष्ण केवल मेरे साथ ही नृत्य कर रहे हैं। कुसुम पुञ्ज

प्रस्फुटित हो गयें भ्रमर प्रस्फुटित होकर रस पूर्ण हो गये। वे सरस रस को भ्रमरगण मधुपान करने लगे। इसप्रकार गोपियों ने रास विलास में यह जाना कि श्रीकृष्ण का मन श्रीराधा पर ही सर्वाधिक है। इसप्रकार चन्द्रावली व राधा के साथ ही वे मन कर गये। पुनः वे श्रीराधिका के प्रेम के प्रति सर्वाधिक आकृष्ट होकर उन्हें एकाकी वन में ले गये। बड़ू चण्डीदास ने वासुली माता की कृपा से यह 'राधा की सर्वोत्कृष्टता' नामक गान गाया।।१८।।

श्रीराधार मान
श्रीकृष्णेर उक्ति
पाहाड़िया राग–क्रीड़ा–दम्भक

तमाल कुसुम चिकुर गणे। नील कुरुबक तोर नयने।।
सुपुट नासा तिलफुले। देखि तोर गण्डयुग महुले।।
आधर सुरंग बान्धुली फुले। कण्ण युग तोर ए बगहुले।।
मुकुलित कुन्द तोर दशने। खस्तरी कुसुम तोर वसने।।
भुजयुग हेम यूथिका माले। आशोकनबक करयुगले।।
मुकुलित थलकमल तने। रोमराजी तात आतयीगणे।।
गभीर नाभी नागेशर फुले। कनक केतकी जंघ युगले।।
चरणकमल थलकमले। आंगुली चम्पक कलिका जाले।।
नखरनिकर देखि गुलाले। शिरीष कुसुम तनु सकले।।
कनक चम्पक कुसुम पान्ती। तोह्मार सकल शरीर कांती।।
नेआली सआली माह्ली विकसे। तोह्मार मधुर ईषत हासे।।
देखों मो तोर फुले शरीरे। गाइल चण्डीदास बासली वरे।।१९।।

अहो हे राधे! तुम्हारे केशकलापों में तमाल कुसुम, नयनों में नील कुरुवक सुस्पष्ट नासिका में तुम्हारे गण्ड युगल में महूया फूल, तुम्हारे सुरंग अधरों में बांधुली पुष्प, तुम्हारे कर्ण युगलों में बकफूल आहा कितनी शोभा पा रहे

हैं। तुम्हारी गंभीर नाभि में नाग केसर फूल सुवासित हो रहे हैं। तुम्हारी जंघा युगल फूल की शोभा को स्वर्ण केतकी बढ़ा रहे हैं। तुम्हारे श्रीचरणकमल में स्थल कमल श्रीअंगुलियों में चम्पक कलिका जाल, समस्त शरीर में शिरीष कुसुम महक रहा है व कनक चम्पक कुसुमों की पंक्ति में तुम्हारे सारी शरीर की कांति, तुम्हारी मधुर हंसी में नवमल्लिका की शोभा पा रहा हूँ।

हे राधे! यह तुम्हारा देह सदा कुसुमों से गठित देखकर हर्षित होता हूँ। चण्डीदास वासलीदेवी के कृपा वर से यह 'श्रीराधिका का कुसुमित शरीर' यह गान गाया।।१९।।

श्रीराधार आत्म निवेदन
भाठि आलीराग–रूपक

तिरीर सभाव कणे करे।
प्राण काह्नाञि ल
तात रोष ना कर नागरे।।
ए तोह्मार वचने।
प्राण काह्नाञि ल
सम कोप खण्डिल एखाने।।ए आ।।
आर हेर
एहि जागे तोह्मार चरणे।
प्राण काह्नाञि ल
आह्मा सम ना करिह आने।।ध्रु०।।
तोह्मार आह्मार दुइ मणे। पक करि गान्थिल मदने।।
तार आनुरूप वृन्दावने। तोर बोल ना करिव आने।।
विधि कैल तोर मोर नेहे। एकइ पराण एक देहे।।
से नेह तिअज नाहिं सहे। से पुणि आह्मार दोष नहे।।
के बुलितें पारे तार गुणे। एकें एकें बसे मोर मने।।
एबें आसि बैस मोर पाशे। गाइल बहु चण्डीदास।।२०।।

हे श्याम! मेरा स्त्री स्वभाव, अतः तुमसे इतना मान किया। हे नागर! प्राणकृष्ण! इससे तुम रुष्ट नहीं होना। तुम्हारी सुधासम विनय वाणी के वर्षण से मेरा सारा मान चला गया। मेरे प्रेम की तुलना अन्य सखी से नहीं करना। अतः अन्य गोपी के समान मुझे नहीं करना (अर्थात् मेरे समान और किसी को प्रेम नहीं करना) क्योंकि तुम्हारे मेरे मन को मदन ने एकत्र करके ग्रंथन किया है। उसी कारण वृन्दावन में तुम्हारे अनुसार चलूंगी अन्यथा नहीं। विधि ने तुम्हारे मेरे प्रेम को मिलाकर एक कर दिया है कि तुम्हारे हमारे बीच किसी तीसरे को सहा नहीं जाता है। इसमें तो मेरा कोई दोष नहीं है। तुम्हारे गुणों को ही कौन बोलकर शेष कर सकता है? अब तुम मेरे पास आकर बैठो। वासलीदेवी ने कृपाकर 'राधिका का कोप शान्ति' सह लीला स्फुरण कराया।।२०।।

स्वप्न रसोद्गार
वेलावलीराग कूड़क

देखिलों प्रथम निशि, सपन सून तों वसी,
सब कथा कहिआरो तोक्षारे हे।
बहियाँ कदमनले, से कृष्ण करिल कोले,
चुम्बिल वदन आक्षारे हे।
ए मोर निष्फल जीवन ए बड़ायि ल।
से कृष्ण आनिया देह मोरे हे।।ध्रु०।।
लेपिआँ तनु चन्दने, बूलिआँ तवे वचने,
आड़वाशी वात्र मधुरे।
चाहिल मोरे सुरती, ना दिलो मो आनुमति,
देखिलों मों दुअज पहरे।
तिअज पहर निशी, मोएं काहुईर कौले,

नेहानिलों ताहार वदने।
इसत वदन करी, मनमोर निल हरी,
वेआकुली भयिलों मदने।
चौठ पहरे काउ, करिल अधर पान,
मोर भैल रति रस आशे।
दारुण कोकिल नादे, भांगिल आक्षर निन्दे,
गाइल बडू चण्डीदासे।।२१।।

प्रथम रात्रि में मैंने स्वप्न देखा बैठकर कथा सुनो, तुम्हें सब बताऊँगी, कृष्ण कदम्ब तल में बैठकर मुझको गोद में लेकर चुम्बन किया। पौर्णमासी देवि! मेरा यह जीवन निष्फल है। मुझे कृष्ण को लाकर दो और मैंने देखा कि उसने अपने श्यामसुन्दर देह में चन्दन लगाया था। वह मुझे बुलाते हुए मधुर वंशी बजा रहा था। उसने मुझसे प्रेम करना चाहा। मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। द्वितीय प्रहर में भी मैंने वही स्वप्न देखा वह वंशी बजा रहा था। तृतीय प्रहर रात्रि में भी मैंने वही स्वप्न देखा कि मैं कृष्ण की गोद में बैठकर उसका मुखकमल देख रही हूँ। उसने मधुर हंसी–हंसते हुए मेरा मन ही चुरा लिया। मैं मदन के बाणों से जर्जरित हो उठी। चतुर्थ प्रहर में कृष्ण ने स्वप्न में मेरे अधरों का पान किया। मेरी भी उनसे प्रेम करने की इच्छा हुई कि इतने में कोकिल के तीव्र निनाद ने मेरी निद्रा को हरण कर लिया। वासलीदेवी की प्रेरणा से मैंने यह स्वप्न कथा वर्णन की।।२१।।

वान–खण्ड
श्रीराधार उक्ति
धानुषी राग लघूशेखर

खोंपा परतेख मोर, त्रिदश ईश्वर हर,

केशपाशे नील विद्यमाने।ए आ।
सिनेर सिन्दूर सुर, ललाटे तिलक चाँद,
नयन वसए मदने।।ए आ।।
सूण बढ़ाइ ल
बोल गिआँ गोविन्दक वाते।।ए आ।।
तीन भुवन वीर राखये यौवन धन।
कि करिते पारे जगन्नाथे।।ए आ।।ध्रु०।।
नासा विनतानन्दन, पांडु गंडु पाशे कण,
बिम्ब ओष्ठ पुष्प दन्त संगे।
कुचयुग युधिष्ठिर, बाहु दण्ड मनोहर,
सुग्रीव शरीरे वसे रंगे।
वलि वसे नाभि तले, पृथु नितम्ब युगले,
मांझ देशे सिंह विद्यमाने।
जघने वसे नूपुरु, अतिशय रुचि गुरु,
पद नख नक्षत्र गणे।
हाथे धरी धनु बाणे, काहु आसु विद्यमाने,
तमों ताक नाहिं मोर डरे।
बोल देता काहु पाशे, गाइल बड़ चण्डीदासे,
देवी वासलीर वरे।।२२।।

श्रीराधिका बोलीं– मेरे केशों का चूढ़ा साक्षात् महादेव। मेरे केशपाशों में नील (सुग्रीव के सेनापति) विद्यमान है। सिंथी के सिन्दूर में सूर्य, ललाट का तिलक चन्द्र और नयनों में मदन विराज रहा है। सुनो, पौर्णमासि! गोविन्द को जाकर यह कथा बोलो। तीनों भुवनों के वीरगण मेरी रक्षा कर रहे हैं। जगन्नाथ क्या कर सकते हैं? मेरी नासिका में गरुढ़, गण्डस्थल में पाण्डू गण्ड के पार्श्व में कर्ण बिम्ब ओष्ठ में पुष्प दन्त (गन्धर्व) साथ में हैं। मनोहर बाहुयुगल में दण्ड–

धर यमराज सुग्रीव (एक अर्थ में वानरराज, द्वितीय अर्थ में सुन्दर ग्रीवा) नाभितल में बलि (असुरराज, अन्य अर्थ में त्रिवली) विराजमान है। क्षीण कटि देश में सिंहराज जंघाओं में पृथुराज, पदनख में नक्षत्रगण हैं। कान्हाई यदि धनुष बाण लेकर भी हाथ में आये तो भी भय नहीं है। हे दूति! कृष्ण के पास जाकर यह मेरी कथा सुनाओ। देवी वासली के वर से बडू चण्डीदास ने यह गीत गाया है।।२२।।

श्रीकृष्णेर उक्ति

बसन्त राग – एकताल

काली दलिल आक्षे शलिल शोधिल।
कंस मारिवारे आक्षे आवतार कैल।।
मामा वध करिवो मों लिखित करम।
ते कारणे गोपकुले लभिल जनम।।
पसरिलेह मदन पाँच बाणे।
के तोर राखिवे राखउ पराणे।।ध्रु०।।
हेर फूलेर धनु फूलेर पाँच बाण।
एइ फूले आजि तोर लइवों पराण।।
आक्षार खाखार कैले सब जन खाने।
ते कारणे राधा तोके जोड़ों पाँच बाणे।।
हेन पाँच बाणे काहू मारे परतिरी।
आक्षा ना चिउसि राधा बड़ आछिदरी।।
पूरुवे दूति मारिलि कमन कारणे।
एवें तोर फल हेर देउं एइ बाणे।।
वाम हाथे धनूक डाहिन हाथे बाण।
राधार हिआत माइल सुदृढ़ संधान।।
पड़िली हालिआं राधा फूलेर शरे।
गाइल बडू चण्डीदास वासलीवरे।।२३।।

मैंने ही काली (कालीय) नाग का दमन किया था

एवं उससे विषाक्त कालिय दह (यमुना जल) का शोधन भी किया; कंस को वध करने के लिये मैं ही अवतीर्ण हुआ था। मैं कंस (मामा) का वध करूँगा। इस कार्य को कुण्डली में लिखवाकर मैंने जन्म ग्रहण किया। मदन के पाँच बाण मारने पर कौन तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगा? वह भले करे, फूलों का धनुष और फूलों के पाँच बाण देखो, इन्हीं फूलों से आज तुम्हारे प्राण लूँगा। सभी लोगों के सामने तुमने मेरी निन्दा की। इसीलिये मदन के पाँच बाण तुम्हारी ओर साधे हैं। इसीप्रकार ये कान्हा पाँच बाणों से परस्त्रियों को मारता है। अरी, धृष्ट राधा! तू मुझको नहीं जानती, किस कारण से तूने मेरी दूती को मारा। अभी देखो, तुमको इन बाणों से उसका मजा (प्रतिफल) चखाता हूँ। इतना कहकर अपने बायें हाथ से धनुष और दायें हाथ से बाण लेकर कान्हा ने राधिका के वक्षस्थल में सुदृढ़ संधान करके मारा। राधिका फूलों के बाणों से हिलकर भूमि पर गिर पड़ीं। श्रीश्रीवासलीदेवी के वर से बड़ू चण्डीदास ने यह 'श्रीकृष्ण की उक्ति' नामक गीत गाया है।।२३।।

श्रीकृष्णेर अन्तर्ध्यान

कृष्ण परशिल करे शरीर राधार।
विहड़िल आष्ट धातु आयिल ताहार।।
धेआन करिआँ करे झाड़े वनमाली।
धीरे धीरे गाअरानी तोले चन्द्रावली।।
मरिआँ जिली राधा गोकुल समाजे।
तिरीवधे उद्धार पाइल देवराजे।।ध्रु०।।
तालेर विनि ए राधाक विचि काहू।
निर्मल जमुना जल करायिल पान।।
जिआँ उठिली राधा परम हरिषे।

सखिजन हुलाहुली पाड़े चौदिशे।।
राधा वस करि कान्ह गेला वृन्दावने।
तार पाछे गेली राधा विकल मदने।।
वृन्दावने भ्रमर कोकिल काढ़े राए।
विकसित कुसुम दक्षिण बहे बाए।।
आचम्बित लुकाइया कानहुई वृन्दावने।
नव किसलय गणे रचिया शयने।।
तार मांझे वसिया थाकिला नारायणे।
गाइल बद्ध चण्डीदास वासली गणे।।२४।।

श्रीकृष्ण ने श्रीराधा के शरीर का स्पर्श किया। तब कृष्णप्रिया को चेतना आ गई। तब कृष्ण ध्यान करके राधा की झाड़ फूँक करने के ब्याज से सर्वांग में हस्त स्पर्श करने लगे। चन्द्रावली ने उनके शरीर को धीरे-धीरे उठाया।

वे बोलीं- राधा! तुम तो मर ही गई थी, अब तुमने जीवन पाया। गोकुल समाज में देवराज (कृष्ण) स्त्री वध से रक्षा पाया। ताल पत्र द्वारा कृष्ण राधा की हवा करने लगे और उसको निर्मल यमुना जलपान कराया। तब राधिका हर्षपूर्वक उठ बैठीं। सखियाँ चारों ओर से हर्षपूर्वक हरि-हरि बोलने लगीं। राधा को वशीभूत करके कृष्ण वृन्दावन गये।

मदन से व्यथिता (विकला) राधा उनके पीछे-पीछे गई। उन्हें देख कोकिल एवं भ्रमरादि आनन्द कोलाहल से कूजने लगे। कुसुम विकसित एवं दक्षिण वायु प्रवाहित होने लगी। कृष्ण अचानक वृन्दावन में छिप गये। नवकिशलय दल (पत्रों की) शय्या रचना करके उस पर नारायण रूप से विराजमान हो गये। वासलीदेवी की कृपा से राधाकृष्ण की यह लीला ध्यान में आई; जिसे हस्त लिखित किया।।२४।।

राधा विरह

श्रीराधा के प्रति श्रीकृष्णे की उक्ति
मल्लार राग रूपक

अहो निशि रूप धेयाई।
मन पवन गगने रहाई।।
मूल कमले कयिले मधूपान।
एवे पाइया आक्षे ब्रह्मज्ञान।।
दूर अनुसर सुन्दरि राई।
मिछा लोभ करो पाइते कान्हाई।।ध्रु०।।
ईड़ा पिंगला सुसमना सन्धि।
मन पवन तात कैल बन्दी।।
दशमी दुयारे दिलों कपाट।
एवे चड़ि लों से योगवाट।।
गेआन बाणे छेदिलों मदनबाण।
ते आर ना भोलो तोक्षार यौवन।।
एवे देहे मोर नाहि विकार।
आसार देखिलों सब संसार।।
राधाक बूलिलं निठुर वाणी।
नागर वर देव चक्रपाणी।।
धेआन धाकिल निश्चल मने।
गाइल बडू चण्डीदास वासलीगणे।।२५।।

मैं अहर्निश योग ध्यान करता हुआ। मन पवन को गगन में रखता हूँ। मूल कमल का मधुपान किया। अब मैंने ब्रह्मज्ञान पाया है। सुन्दरि! (राधे) दूर हो जाओ। कान्हाई को पाने का मिथ्या लोभ कर रही हो और सुनो मैंने ईंगा, पिंगला और सुषुम्ना की संधि में मन पवन को बंदी बनाया। दशम द्वार में मैंने कपाट दिया। अब मैंने योगपथ में आरोहण कर लिया है एवं ज्ञान बाण से मदन बाण का छेदन कर दिया। इसीलिये तुम्हारे यौवन से अब मैं विमोहित नहीं

होऊँगा। मेरे देह में अब और कोई विकार नहीं है। मैंने समस्त संसार को असार देख लिया है। नागर शिरोमणि कृष्ण ने राधा को यह सब निष्ठुर कथा कहकर निश्चल मन से ध्यानस्थ हो गये। श्रीवासलीदेवी की कृपा से बड़ू चण्डीदास ने 'श्रीराधाप्रति कृष्ण की उक्ति' यह मधुर गान किया है।।२५।।

श्रीकृष्णे के प्रति सखि की उक्ति
देशागराग क्रीड़ा

तनेर ऊपर हारे
आल
मान ए येहेन भारे।
अति हृदये खिनी राधा चलिते ना पारे।।
सरस चन्दन पंके।
आल
देहे विधम शन्के।
दहन समान माने निशि शशांके।
आल
तोर विरह दहने।
दगधिली राधा जीए तोर दरशने।।ध्रु०।।
कुसुम सर हुताशे, तपत दीर्घ निशाने,
सघन छाड़ये राधा बसि एक पाछे।।
क्षेपे सजल नयने, दश दिगे क्षणे क्षणे,
नाल हीन कैल येन नील नलिने।।
देखि पल्लव शयने, आंगार राशि समाने,
मूदये नयन आति तरासित मने।
वाम करेते वदने।
तोक्षाक चिन्ते राधा निश्चल मने।

क्षणे हासे क्षणे रोषे, क्षणे कापए तरासे,
क्षणे कान्दये राधा क्षणे करये विलासे।
चलिते तोक्षार पाशे, नारे मदनेर रोषे,
वासली चरण गाइल बडू चण्डीदासे।।२६।।

ओहे! राधिका तन पर पहने हारों को भार मान रही है। अति दुर्बल हृदय के कारण वो नहीं चल पा रही हैं। सरस चन्दन के लेप को देह में लेने पर भी विषम शंका को प्राप्त हो रही हैं। निशाकालीन चन्द्रमा को भी अग्नि मान रही हैं। तुम्हारे विरह की अग्नि से दग्धा राधा तुम्हारे दर्शन से ही बच पायेंगी। राधा एक तरफ बैठी मदन के बाणों से जलकर दीर्घ श्वास छोड़ रही थीं, क्षण-क्षण में नयनाश्रु बहाती हुई नीलपद्म को जैसे नाल हीन की हुई थी। पल्लव शयन को तप्त अंगार राशि के समान देखकर भयभीत होकर नयन बन्दकर रही हैं। बायें कर पर मुख रखकर आकाश की ओर देखकर राधा निश्चल चित्त से तुम्हारी ही चिन्ता कर रही है। (राधा) कभी हंस रही, कभी रो रही और कभी दुःख से कम्पित हो रही है। क्षण में ही विलास करती हैं। मदन रोष के भय से तुम्हारे पास नहीं जा पा रही हैं। श्रीवासली देवी की वन्दना करके बडू चण्डीदास ने यह 'श्रीकृष्ण के प्रति सखियों की उक्ति' नामक गान गाया है।।२६।।

राधा विरह
श्रीराधा की उक्ति
मालव श्रीराग - यति

हाथे चान्द मानी बड़ायि कराइले पागलि।
आइ हनक पीठ दिलों लाजे तिनाञ्जली।।
आशों आश दिआं तोक्षे हैलाएक भीते।

काहुत लागिया मोर वेयाकुल चिते।।
जानिल जानिल बड़ायि चिन्हिल कान्हाई।
आछूक परस रस दरशन नाहिं।।ध्रु०।।
तोक्षार वचने बड़ायि नेहा बाड़ायिलों।
काहू समे भाले रस भुंजिते ना पाइल।।
पुरुव जनमे किवा खण्डव्रत कैल।
ते कारण मोर मनोरथ ना पूरिल।।
दुःख सुख पाँच कथा कहिते ना पाइल।
झालिआर जल येम तखने पलाइल।।
दिने दिने तनू शेश मदन तरासे।
कौतुके बाढ़ाइल नेहा एवे सेइ नाशे।।
तोक्षार वचने बड़ायि थिर नहे मने।
केमने पाऊ एवे मधुसूदने।।
कान्हेर उद्देश याहा येन लए मने।
गाइल बडू चण्डीदास वासली गणे।।२७।।

हाथ में चाँद लाकर दोगे बोलकर बड़ाई (पौर्णमासी) को पागल कर दिया। आयान के प्रति विमुख हो गई। तीन बार अञ्जली लेकर शेष में विसर्जन दिया। आश्वासन देकर तुम एकबार जाकर खड़े हो गये। कानू के लिये मेरा चित्त व्याकुल हो उठा। जान गई, जान गई देवी कान्हाई को जान गई। स्पर्श सुख तो दूर रहा, दर्शन ही नहीं मिलता। हे देवि! तुम्हारे कहने पर मैंने उससे प्रेम बढ़ाया। किन्तु कानू के संग मेरे भाग्य दोष से अच्छी तरह मेल मिलाप प्रीति संभाषण नहीं कर पाई। न जाने पूर्व का कोई दोष (खण्डव्रत) लगता है; इसी कारण मेरा मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। मेरे सुख दुःख की आन्तरिक कथा मैं नहीं कर पाई। मानो मृग की तृष्णा का जल वहीं शेष हो गया। मदन की पीड़ा से मेरा देह क्षीण हो चला। कौतुक वश प्रेम

उनसे बढ़ाया, वही अभी नाश हो गया तुम्हारी कथा में हे देवि (पौर्णमासी) मेरा मन स्थिर नहीं हो रहा है। अब श्रीमधुसूदन को कैसे पाऊँगी? कान्हाई के उद्देश्य के लिये जाऊँगी। यही मेरे मन में बार-बार आ रहा है। वासलीदेवी की कृपा से बडू चण्डीदास ने यह गीत गाया।।२७।।

ललित राग - एक ताल

ये कान्हू लागियाँ, मो आन न चहिलों,
बड़ायि।
हेन मने पड़ि हासे, आक्षा उपेक्षिआं रोषे,
आन लञा वन्चे वृन्दावने।।
बड़ायि गो।।
कत दुःख कहिव काहिनी।
दह वुलि झाँप दिलों से मोर सुखाइल
मोएं नारी बड़ी आभागिनी।।ध्रु०।।
नन्देर नन्दन काहू यशोदार गोपाल।
तार सने नेहा बाड़ायिलों।।
गुपतें राखिते काज ताक मोएं विकासिलों।
ताहार उचित फल पाइलों।
स्वामि मोर दुरवार गोवाल विशाल।
प्रति बोल ननन्द वाछे।
सब गोपीगणे मोरे कलंक तुलिया दिल।
राधिका कान्हाइर संगे आछे।
एत सब सहिलों मो कान्हेर नेहात
लागि बड़ायि।
माके नेह कान्हाईर पाशे।
वासलीचरण शिरे वन्दियाँ
गाइल बडू चण्डीदासे।।२८।।

हे बड़ाई! (पौर्णमासी) कानाई के लिए मैंने कुछ नहीं चाहा। उनके सुख के आगे मैंने छोटे बड़े किसी की भी परवाह नहीं की और देखो, वही कान्हाई मेरी उपेक्षा करके किसी अन्य गोपी के साथ वृन्दावन में विहार कर रहा है। इससे और दुःख की बात और क्या बोलूँ? अग्नि में जब कूदने गई तो वह अग्नि भी मेरे लिये सूख गई; फिर मैं मर नहीं सकी मैं बड़ी अभागिनी नारी हूँ।

उस नन्दनन्दन यशोदानन्दन से प्रेम बढ़ाया, कार्य गोपन रखते मैंने प्रकाश कर लिया। इसी का मैंने उचित फल पाया है। मेरा स्वामी अतुलनीय दुर्दमनीय विशाल ग्वाल मेरी ननदिनी कथा विचार करे। (हर बात में छल करते हैं) सभी गोपियों ने मुझे कलकिन्त कर दिया कि राधाकृष्ण के साथ रहती है। कानू के प्रेम के लिये ही मैंने यह सब सहन किया। हे देवि! मुझे कान्हाई के पास ले चलो। श्रीवासलीदेवी के श्रीचरण मस्तक से नमन करते हुए; उनकी कृपा से यह गीत गाया।।२८।।

कोड़ाराग क्रीड़ा

निशि आँधियारी, ताहात केमने नारी,
जिए से जाहार पासत पुरुष नाही।।आल।।
मोरे किना मयिआँ, गेल बढ़ायि नाए,
विरहे विकली खोंजो मो नन्देर पोए।।
निशि सपन देखिलों, काहू कोले करि सुइलें,
चिआयिञा चाहों नाहिक बाल गोपाले।।
ए मोर यौवन भार, सकल भैल असार,
आनल सरण हैवे दूती रे।।
ये डाले करों मो भरे, सेडाल भांगिया पड़े,
नाहि हेन डाल यात करों विसरामे।।

आनि देह यवे कान्हे, भिड़ि देउ आलिंगने,
ताक न तेजिवों आर जरमे।।
नेह अमूल रतने, पालह मोर वचने,
एकबार मोक आनि देह कान्हे।
धरों दूता तोर पाए, हेर मोर प्राण याए,
गाइल बडू चण्डीदास वासली चरणे।।२६।।

घोर अन्धकार रजनी में जिस युवती के पास पुरुष नहीं? वह रमणी कैसे बच सकती है? हा हा देवि! मेरे साथ क्या नहीं हुआ? विरह व्यथिता होकर मैं श्यामसुन्दर को खोज रही हूँ। निशाकाल में मैंने स्वप्न में देखा कि मैं कृष्ण को आलिंगन करके सो रही हूँ। जागकर देखा कि कृष्ण नहीं है। मेरा यह सारा यौवन भार असार हो गया।

हे दूति! अब अग्नि ही एकमात्र मेरी शरण है। मैं जिस वृक्ष की डाल पर बैठती हूँ कि वही टूट पड़ती है। ऐसी कोई डाल नहीं कि जिस पर मैं स्थिर विश्राम ले सकूँ? मेरी बात रखो मुझे एकबार श्याम लाकर दो। हे दूति! तुम्हारे चरण पड़ती हूँ। देखो, न मेरे प्राण जा रहे हैं। वासलीदेवी के श्रीचरणों के प्रसाद से बडू चण्डीदास ने यह गीत गाया।।२६।।

मालव श्रीराग – यति

फूटिल कदम फूल भरे नोंआइल डाल।
एभों नाइल गोकुलक बाल गोपाल।।
कत ना राखि प्रेम नेते उघाड़िआँ।
निदय हृदय कान्हू ना गेला बोलाईया।।
शैशवेर नेहा वड़ायि के ना विहड़ाइल।
प्राणनाथ कान्हू मोर एभों घर नाइल।। ध्रु०।।
मूछिआँ पेलाइवों बड़ायि शियेर सिन्दूर।

बाहूर वलया मो करिवों शंखचूर।।
कान्हू बिन सब क्षण पोड़ये पराणी।
विषाइल काण्डेर धाए येहेन हरिणी।।
पूनमती सब गोऑलिनी आछे सुखे।
कोन दोषे विधि मोक दिल एत दुःखे।।
अहो निशि कान्हाईर गुण सोंअरिआँ।
वजरे गढ़िल बुक ना जाए फुटिया।।
जेठ मास गेल आसाढ़ परवेष।
श्यामल मेघे छाइल दक्षिण प्रदेश।।
एभों नाइल से निठुर नन्देर नन्दन।
गाइल बढू चण्डीदास वासली गण।।३०।।

कदम्ब वृक्ष पर फूल फूटे हैं। फूलों के भार से डाल झुक गई। कृष्ण अभी तक गोकुल में नहीं आये। हाय! मेरे हृदय का दर्द मैं कब तक छिपाकर रखूँगी। नृदय हृदय कानू कुछ बोलकर नहीं गये। हा देवि पौर्णमासि! शैशवकाल के इस प्रेम को किसने विच्छेद किया? मेरा प्राणनाथ कृष्ण आज भी मेरे घर नहीं आया। देवि! मैं अपने सिर का सिन्दूर पोंछ दूँगी। बाहों के कंगन चूर्ण-विचूर्ण कर दूँगी। हाय हाय! कानू बिना हर समय मेरे प्राण दहक रहे हैं। मानो किसी हिरणी को विषाक्त बाण लगने के समान ही। ब्रज की पुण्यवती ग्वालिनियाँ सभी सुखी हैं। मेरे किस दोष के कारण विधाता मुझे इतना दुःख दे रहा है? हाय! हाय!! दिन-रात कानाई के गुण स्मरण करके भी वज्र से गठित हृदय विदीर्ण नहीं होता। ज्येष्ठ मास गया आषाढ़ ने प्रवेश किया। श्यामल मेघ ने दक्षिण प्रदेश को ढ़क लिया है। अब तक वह निष्ठुर कृष्ण नहीं आया। देवी वासलीगण की कृपा से मैंने राधिका का विरह संताप वर्णन नामक गीत गाया

है।।३०।।

श्रीराग कुड़क्क

आषाढ़ मासे नव मेघ गरजये।
मदन कदने मोर नयन झूरये।।
पाखी जाति नहों बढ़ायि ठड़ी जाओं तथा।
मोर प्राणनाथ कान्हाञि वसे यथा।।
केमने वंचिवो रे वरषा चारि मास।
एभर यौवने काहू करिले निरास।।
श्रावण मासे घन घन वरषे।
सेजात सुतिआँ एकसरी निन्द आईसे।।
कत ना सहिव रे सुभसर जाला।
हेनकाले बड़ायि कान्हू समे कर मेला।।
भादर मासे अहोनिशि आन्धकारे।
शिखि भेक डाहूक करे कोलाहले।।
तात ना देखिवो यवे कान्हाईर मुख।
चिन्तिते चिन्तिते मोर फूटे जावे बुक।।
आशिन मासेर शेषे निवड़े वारिषी।
मेघ वाहिया गेले फूटिवेक काशी।।
तवे कान्हूविनी हैव निफल जीवन।
गाईल बडू चण्डीदास वासुली गण।।

इस आषाढ़ मास में नूतन मेघ गर्जन कर रहा है। मदन की पीड़ा में मेरे नयन झरझर कर झर रहे हैं। हे देवि! मैं तो पक्षी नहीं मैं उनके पास उड़ जाऊँगी। जहाँ मेरा प्राणनाथ है। वर्षा के ये चार मास मैं कैसे कर काटूँगी? हाय! हाय!! इस भरी जवानी में कानू ने निराश किया। हे देवि! (पौर्णमासी) मेरी इस समय कानू के साथ मुलाकात करा दो। श्रावण मास में घन-घन वर्षा होती है। मैं अकेली

शय्या पर सोती हूँ तो मुझे नींद नहीं आती कुसुम बाण की ज्वाला को मैं कब तक सहन करूँगी? भाद्रमास मैं दिन–रात अन्धकार मयूर मेंढ़क डाहुक आदि कोलाहल कर रहे हैं। इस समय भी यदि मैं कृष्ण को नहीं देखूँ तो चिन्ता में मेरा हृदय फट जायेगा।

आश्विन मास के शेष में वर्षा बन्द होगी। मेघों के हट जाने पर कास फूल फूटेंगे, तब कानू बिना जीवन विफल हो जायेगा। वासलीगण की कृपा से 'राधा का कृष्ण विरह' नामक गीत गाया।।३१।।